हो गई।

सुभाषचन्द्र बोस का योगदान

सुभाषचन्द्र बोस ने मातृभूमि के लिए स्वतंत्रता संग्राम में अपना विशिष्ट योगदान दिया। आजाद हिंद फौज के माध्यम से उन्होंने जो भी प्रयत्न किये, चाहे वह कितने भी कम समय तक रहा हो, एक महत्वपूर्ण कारक बना, जिसने अंततः ब्रिटिश लोगों के कार्यों को रोकने और उन्हें अपने देश में वापस आने के निर्णय में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

अंग्रेजों द्वारा सुभाष को यूरोप से निकाले जाने के बाद, सुभाषचन्द्र बोस ने विभिन्न यूरोपीय देशों के बीच संपर्क स्थापित किया था, जो भारत में इससे पहले नहीं हो सका था। सुभाषचन्द्र बोस को इन देशों ने एक मजबूत आर्थिक निवेश की स्वीकृति दी।

नेताजी ही वह व्यक्ति थे, जिन्होंने 'आजाद हिंद फौज' की महिला शाखा (वूमेन विंग) रानी लक्ष्मीबाई फौज की स्थापना की।

एक समय में जब ब्रिटिश देश में भारतीयों का खून बहा रहे थे, वह बर्लिन से रेडियो प्रसारण के बारे में उनकी ही शृंखला थी कि कम से कम देश के लिए शहीद होने वालों को अमर बनाया जा सके।

निःसंदेह सुभाषचन्द्र बोस ने महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू सहित 200 वर्षों के ब्रिटिश शासन के चंगुल से अपने उचित तरीकों से देश को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यहां तक कि जब उनकी मौत हुई उस समय भी वह रूस में स्थानांतरण करने और ब्रिटिश लोगों से मुकाबला करने के लिए नये रास्तों को तलाशने की योजना पर कार्य कर रहे थे।

Rajeet kumar Singh
Asst. Professor, History
D.S.P.M.U.

Scanned with CamScanner

यहां पर शाही प्रशासन ने उनकी मदद के लिए हामी भरी थी।

यहीं पर 1942, मार्च में भारत के क्रांतिकारी रासबिहारी बोस ने आजाद हिंद फौज का गठन किया। आगे चलकर 'आजाद हिंद फौज' का दायित्व एवं नेतृत्व सुभाषचन्द्र बोस के हाथों में आ गया। यहां सुभाष ने भारतीय युद्ध में शामिल होनेवाले भेदियों के साथ 'आजाद हिंद फौज' का गठन किया, जो ब्रिटिश भारतीय सेना के लिए काम करते थे। अक्टूबर, 1943 ई० में सुभाष ने सिंगापुर में अस्थायी सरकार की स्थापना की घोषणा की। इसे द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, असैनिक शक्तियों द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई थी।

अस्थायी सरकार की स्थापना के बाद सुभाषचन्द्र बोस ने जापानियों के सहयोग से भारत में अंग्रेजों पर आक्रमण की योजना बनाई। उनके नेतृत्व में आजाद हिंद फौज (INA) ने अंग्रेजों के खेत पर आक्रमण कर दिया। कोहिमा पर भी 'आजाद हिंद फौज' ने राष्ट्रीय ध्वज फहरा दिया। इसके अलावा प्रारंभिक आक्रमण में कई भारतीय प्रदेशों को अंग्रेजों से मुक्त कराने में आजाद हिंद फौज को सफलता मिली।

22 सितंबर 1944 को नेताजी ने शहीद दिवस के अवसर पर अपने सैनिकों से यह कहा था "तुम अपना खून दो और मैं तुम्हें आजादी दूंगा।"

13 अगस्त 1945 ई० को अमेरिका ने जापान के दो बड़े नगरों हिरोशिमा और नागासाकी पर बम गिराकर पूर्णतः नष्ट कर दिया। सुभाषचन्द्र बोस को रंगून छोड़कर टोकियो भागना पड़ा।

रास्ते में विमान के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने पर 1945 ई० में उनकी

Scanned with CamScanner

"सुभाषचन्द्र बोस और आजाद हिंद फौज"

B.A. SEMESTER VI , Paper 13th Guess Question (5)

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा के कटक शहर में हुआ था। उनके पिता का नाम जानकीनाथ बोस और माता का नाम प्रभावती था। 1919 में सुभाष ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बीए किया। 1920 ई० में सुभाषचन्द्र बोस ने 'आइसीएस' की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। 22 अप्रैल 1921 ई० को उन्होंने इस पद से त्यागपत्र दे दिया।

इसके पश्चात् वे भारत आये और 20 जुलाई 1921 ई० को महात्मा गाँधी से उनकी पहली मुलाकात हुई। इसके बाद वे भारत के स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बने।

सुभाषचन्द्र बोस वर्ष 1938 और 1939 ई० में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के अध्यक्ष के रूप में चुना गया। हालांकि उन्होंने वर्ष 1940 में अपने पद से इस्तीफा दे दिया और 'फारवर्ड ब्लॉक' नाम से अपनी पार्टी की स्थापना की।

विदेश में स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी

इसके बाद सुभाषचन्द्र बोस को ब्रिटिश सरकार द्वारा नजरबंद कर कलकत्ता के प्रेसिडेंसी जेल में रखा गया। 17 नवंबर 1740 को सुभाष गुप्त तरीके से जेल से भाग गये। वह 28 मार्च 1941 ई० को बर्लिन पहुँचे।

यहां पर सुभाषचन्द्र बोस ने रूस और जर्मनी से अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध करने के लिए सहायता मांगी। जर्मनी में सुभाष ने भारतीय सैनिकों के दो दस्तों का गठन किया। पेरिस और रोम में स्वतंत्र भारत केंद्र की स्थापना की गई। जर्मनी में उन्हें 'नेताजी' की उपाधि दी गई। सुभाषचन्द्र बोस ने वर्ष 1943 में जापान का दौरा किया।

Scanned with CamScanner